16 स्वार्थी दानव

हर रोज अपराह्न में जब बच्चे स्कूल से लौटते तो वे एक बाग में जाकर खेला करते थे। मुलायम, हरी घास से भरा वह एक विशाल सुन्दर बाग था। जहाँ-तहाँ घास के ऊपर तारों की तरह सुन्दर फूल खिले थे। वहाँ बारह सतालू के पेड़ थे जो वसंत के समय लाल और मोती की तरह चमकीली कोमल कलियों से भर जाते। शरद काल में फलों से लदे रहते। पेड़ों पर बैठे पंछी इतने मधुर स्वर में गाते कि बच्चे खेलना छोड़कर उनका संगीत सुनने लगते। 'हम सब यहाँ कितने खुश हैं।' वे एक-दूसरे से जोर-जोर से कहते। लेकिन यह बाग एक दानव का था।

एक दिन दानव लौटकर आया। वह अपने मित्र कॉर्निस आग्रे से मिलने गया था। उसके पास वह सात वर्षों तक रुक गया था। जब वह लौटा तो उसने देखा कि बच्चे बाग में खेल रहे हैं।

'मेरा बाग, मेरा बाग है। कोई भी इस बात को समझ सकता है। मैं अपने सिवा किसी और को इसमें खेलने नहीं दूँगा' - दानव ने कहा।

इसलिये उसने बाग के चारों तरफ ऊँची दीवार खड़ी कर दी, और एक सूचना-पट्ट टाँग दिया- 'अनाधिकार प्रवेश करनेवालों को सजा मिलेगी।'

वह एक बहुत स्वार्थी दानव था।

बेचारे बच्चों को खेलने के लिए अब कोई जगह नहीं रही। उनलोगों ने सड़क पर खेलना चाहा, लेकिन सड़क धूल और कंकड़ों से भरी थी। वे ऊँची दीवारों के चारों ओर घूमते और अन्दर के सुन्दर बाग की चर्चा करते।

'हमलोग वहाँ कितने खुश थे।' वे एक दूसरे से कहते।

वसंत आया। पूरा देश छोटी-छोटी कलियों और चिड़ियों से भर गया लेकिन स्वार्थी दानव के बाग में अभी भी जाड़ा था। बच्चों के नहीं रहने के कारण न पंछी वहाँ गीत गाते थे और न पेड़ों में फूल लगे थे। सिर्फ बर्फ और तुषार ही खुश थे। बर्फ ने अपनी लंबी उजली चादर से घास को ढँक दिया और तुषार ने सभी पेड़ों को उजले रंग से रंग दिया।

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

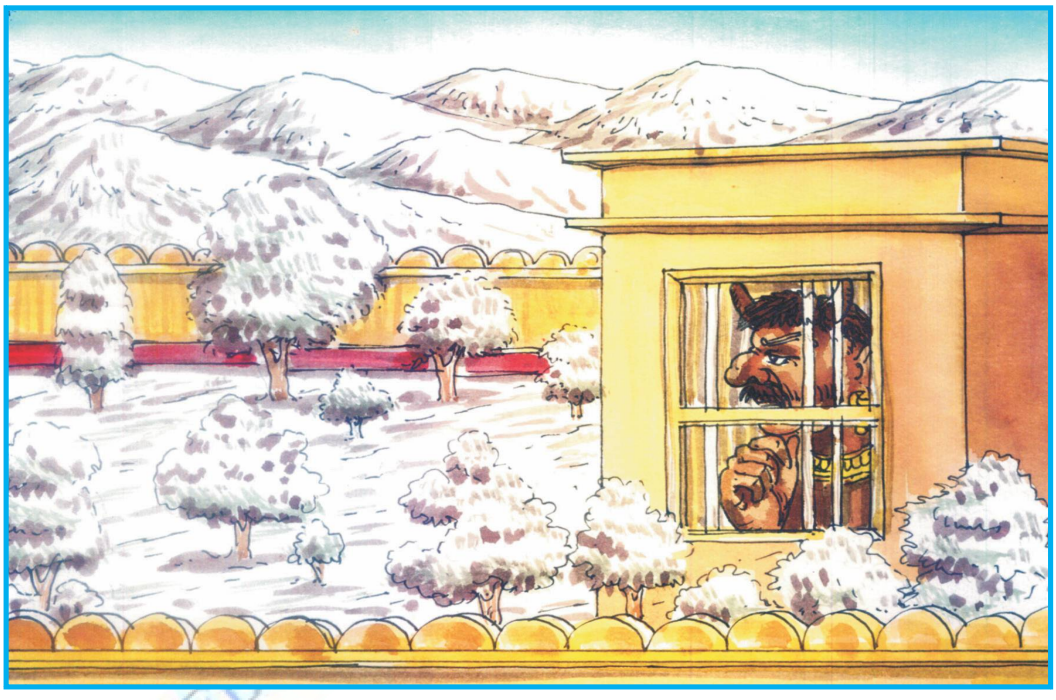

तब ओला आया। हर रोज वह तीन-चार घंटे महल की छत पर बरसता रहता। उसने सारे खपड़े तोड़ डाले। इस तरह वह बाग में दौड़ लगाता रहता। उसका रंग धूसर था और उसकी साँस बर्फ जैसी थी।

''समझ में नहीं आता वसंत आने में विलंब क्यों कर रहा है?' खिड़की के पास बैठा बाहर ठंडे उजले बाग पर नजर दौड़ते हुए स्वार्थी दानव ने कहा। ''मुझे उम्मीद है कि मौसम बदलेगा।''

लेकिन वसंत नहीं आया और न गर्मी आई। शरद ऋतु में हर बाग में सुनहले फल लगे लेकिन दानव के बाग में कोई फल नहीं लगा। वहाँ हमेशा जाड़ा रहता और उत्तरी हवा, ओले और तुषार पेड़ों के आस-पास मँडराते रहते।

एक सुबह, जब दावन अपने बिस्तर पर पड़ा था उसने बहुत सुन्दर संगीत सुना।

दरसअल एक छोटी लिनेट उसकी खिड़की के बाहर गा रही थी। लेकिन उसने बहुत दिनों से अपने बाग में किसी चिड़िया को गाते नहीं सुना था इसलिये उसे लगा जैसे वह संसार का सबसे मधुर संगीत हो। अचानक ओले बन्द हो गये, उत्तरी हवा का शोर बन्द हो गया और

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

खुली खिड़की से एक मधुर सुगंध आने लगी। 'मुझे लगता है आखिर वसंत आ गया है' दानव ने कहा। वह अपने बिस्तर से उछल पड़ा और बाहर देखने लगा।

उसने एक अद्‌भुत दृश्य देखा। दीवार से एक छोटे छेद से बच्चे भीतर घुस आये थे और वे पेड़ों की डालियों पर बैठे थे। हर पेड़ पर एक छोटा बच्चा बैठा था। पेड़ बच्चों को अपने बीच पाकर इतने खुश थे कि वे कलियों से लद गये थे और बच्चों के सिर पर अपनी बाँहों को धीरे-धीरे हिला रहे थे। चिड़ियाँ उड़ रही थीं और खुशी से गा रही थीं। फूल हर घास से निकलकर मुस्कुरा रहे थे।

वह बहुत ही मनोरम दृश्य था। लेकिन बाग के एक कोने में अभी भी जाड़ा था। वह बाग का सबसे दूर वाला भाग था। वहाँ एक छोटा लड़का खड़ा था। वह इतना छोटा था कि वह पेड़ की टहनियों को छू नहीं पा रहा था। वह फूट-फूटकर रोता हुआ चारों ओर घूम रहा था। बेचारा पेड़ अभी भी बर्फ और तुषार से ढँका था। उत्तरी हवा उसके ऊपर गरज रही थी। 'चढ़ो, छोटे बच्चे' पेड़ ने कहा और उसने अपनी डालियों को यथासंभव नीचे झुका लिया। लेकिन बच्चा बहुत छोटा था।

दानव ने जब यह देखा कि उसका हृदय पिघल गया। 'मैं कितना मूर्ख हूँ?' उसने कहा। अब मुझे पता चला वसंत क्यों नहीं आ रहा था। मैं उस छोटे बच्चे को पेड़ के ऊपर चढ़ा दूँगा। मैं दीवार को गिरा दूँगा। मेरा बाग हमेशा के लिये बच्चों का क्रीड़ा स्थल बन जायेगा। वह सचमुच अपने किये पर बहुत पछता रहा था।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

वह नीचे उतरा और धीरे से अगला दरवाजा खोलकर बाग के अन्दर गया। जब बच्चों ने उसे देखा तो वे इतने भयभीत हो गये कि वे सब के सब भाग खड़े हुए। बाग में जाड़ा फिर लौट आया। सिर्फ छोटा बच्चा नहीं भागा, क्योंकि उसकी आँखें आँसुओं से इस तरह भरी थीं कि वह दानव को आते हुए नहीं देख पाया। दावन दबे पाँव उसके पीछे गया और उसे धीरे से अपने हाथ से उठाकर पेड़ के ऊपर चढ़ा दिया।

पेड़ तुरंत खिल उठा और चिड़ियाँ आकर गाने लगीं। वह छोटा बच्चा अपनी दोनों बाँहों को फैलाकर दानव के गले से लिपट गया और उसे चूम लिया।

जब दूसरे बच्चों ने देखा कि दानव अब कठोर नहीं रहा तब वे दौड़ते हुए लौट आये, और उनके साथ वसंत भी आ गया।

'छोटे बच्चो ! यह बाग अब तुम्हारा है' दानव ने कहा। उसने एक बड़ा हथौड़ा लिया और दीवार को तोड़ डाला।

अब दिनभर बच्चे खेलते रहते। शाम को दानव के पास जाकर उसे गुड बाई कहते। 'लेकिन तुम्हारा छोटा साथी कहाँ है ?' जिसको मैंने पेड़ पर चढ़ाया था ?' दानव ने पूछा। दानव उसे सबसे अधिक प्यार करता था क्योंकि उसने उसे चूमा था।

'हमें पता नहीं, बच्चों ने जवाब दिया, 'वह कहीं दूर चला गया है।'

हर रोज अपराह्न में जब स्कूल बन्द होता, बच्चे आते और दानव के साथ खेला करते थे। लेकिन वह छोटा लड़का जिसे दावन बहुत चाहता था कभी दिखाई नहीं पड़ा। दानव सभी बच्चों को बहुत प्यार करता था, फिर भी वह अपने छोटे मित्र के लिये तरसता रहता था।

वर्षों बीत गये। दानव बहुत बूढ़ा और कमजोर हो गया। वह खेल-कूद नहीं कर सकता था, इसलिये वह एक बड़ी आराम कुर्सी पर बैठा रहता। खेलते बच्चों को देखा करता और अपने बाग की प्रशंसा करता। 'मेरे पास बहुत-से सुन्दर फूल हैं', उसने कहा, 'लेकिन बच्चे सबसे सुन्दर फूल हैं।'

एक दिन जाड़े की शाम को जब वह कपड़े पहन रहा था, उसने खिड़की से बाहर देखा।

अचानक वह आश्चर्य से अपनी आँखें मिचने लगा और एकटक देखता रहा। सचमुच वह एक अद्‌भुत दृश्य था। बाग के सबसे अंतिम कोने में एक पेड़ सुन्दर उजली कलियों से लदा

हुआ था। उसकी डालियाँ सुनहली थीं और उनसे चाँदी की तरह उजले फल लटक रहे थे। उसके नीचे वही छोटा बच्च खड़ा था जिसे वह बहुत प्यार करता था।

आनंद से विह्वल दानव दौड़ता हुआ सीढ़ियों से उतरा और बाग में गया। वह घास को पार कर उस बालक के पास गया। लेकिन जब वह उसके बिल्कुल करीब पहुँचा तो वह अवाक् रह गया। क्योंकि वह लड़का घायल था। उसके हथेलियों और पैरों पर दो-दो काँटी के निशान थे।

'किसने तुम्हें घायल किया है ?' दानव ने चिल्लाकर पूछा- 'बताओ मुझे, ताकि मैं अपनी बड़ी तलवार से उसे दो टूक कर दूँ।'

'नहीं', बालक ने जवाब दिया, 'ये प्रेम के घाव हैं।'

'तुम कौन हो?' दानव ने पूछा और एक विचित्र भय ने उसे घेर लिया। वह उस छोटे बालक के सामने घुटने के बल झुक गया।

बालक दानव पर प्यार से मुस्कुराया, और उससे कहा-

'तुम मुझे एक बार अपने बाग में खेलने दो- चूँकि तुमने मुझे अपने बाग में खेलने दिया है, इसलिए अब तुम मेरे बाग में खेलोगे, जो स्वर्ग में है।

जब बच्चे उस रोज अपराह्न में पहुँचे तो उन्होंने उस दावन को पेड़ के नीचे मरा पाया और वह कलियों से बिल्कुल ढँका हुआ था।'

अनुवादक - प्रो. रामजी राय

-ऑस्कर वाइल्ड

शब्दार्थ

स्वार्थी - अपना मतलब निकालने वाला, खुदगर्ज

अपराह्न-दोपहर के बाद, तीसरा पहर

तुषार - पाला

मनोरम - सुंदर

विह्वल-अशांत, व्याकुल, द्रवित

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के चार-चार विकल्प दिए गए हैं। उचित विकल्प के सामने (√) का निशान लगाइए।**

(क) दानव के बाग में सतालू के कितने पेड़ थे?

(i) आठ (ii) दस (iii) बारह (iv) चौदह

(ख) दानव अपने मित्र के पास कितने वर्षों तक रुका था?

(i) छः (ii) सात (iii) आठ (iv) नौ

(ग) इस कहानी के लेखक कौन हैं?

(i) ऑस्कर वाइल्ड (ii) प्रो. रामजी राय (iii) कॉनिस (iv) इनमें से कोई नहीं

2. स्वार्थी दानव ने बाग के चारों ओर ऊँची दीवार क्यों खड़ी कर दी ?
3. बाग के चारों ओर ऊँची दीवार खड़ी करने का क्या परिणाम हुआ ?
4. स्वार्थी दानव ने बाग में कौन-सा अद्‌भुत दृश्य देखा ?
5. छोटा लड़का घायल कैसे हो गया था ?

पाठ से आगे-

1. (क) 'लेकिन बच्चे सबसे सुन्दर फूल हैं।' स्वार्थी दानव ने ऐसा क्यों सोचा ?

(ख) 'ये प्रेम के घाव है।' छोटे लड़के के कहने का क्या अभिप्राय है ?

2. स्वार्थी दानव को कब महसूस हुआ कि उसने बहुत बड़ी गलती की है ?
3. 'अनाधिकार प्रवेश निषेध' ऐसा वाक्य और कहाँ-कहाँ लिखा जाता है?
4. भारतवर्ष में कौन-कौन सी ऋतुएँ हैं। आपको सबसे अच्छी ऋतु कौन-सी लगती है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
5. शीत ऋतु एवं वसंत ऋतु में प्रकृति के दृश्यों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरण-

1. 'अन्' उपसर्ग लगाकर पाँच शब्द बनाइए।

2. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताइए-**

   (क) दोपहर से पहले का समय -

   (ख) दोपहर के बाद का समय -

   (ग) अपना मतलब निकालने वाला-

   (घ) दूसरों पर दया करनेवाला -

   (ङ) दूसरों पर उपकार करनेवाला -

3. इस पाठ में आए विशेषण शब्दों को चुनकर लिखिए।

4. **निम्नलिखित वाक्यों का रूप बदलकर लिखिए-**

   (क) मैं बच्चों को पेड़ पर चढ़ने देनेवाला नहीं हूँ।
   मैं बच्चों को पेड़ पर चढ़ने नहीं दूँगा।

   (ख) फूल खिलने वाले हैं।
   .....

   (ग) छोटी चिड़िया गाने वाली है।
   .....

   (घ) दानव उसे तलवार से दो टूक करनेवाला है।
   .....

   (ङ) अपराह्न में स्कूल बन्द होनेवाला है।
   .....

कुछ करने को-

1. क्या स्वार्थी लोगों को इस प्रकार की सजा देना उचित है? अपने साथियों से चर्चा कीजिए और लिखिए।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

Abdiel Solutions Empowering Technologies